नए वर्ष में भारत के स्वर्ण काल का श्रीगणेश हो जाएगा

एस्ट्रोलॉजी के पहले सॉफ्टवेयर के डेवलपर, एस्ट्रोलॉजर डॉ. अरुण बंसल से एक मुलाकात

कई लोगों के कहना होता है कि वे भविष्य में विश्वास नहीं करते लेकिन ज्योतिष एक विज्ञान है. अब यह विज्ञान उन्नत हो गया है और टेक्नोलॉजी की सहायता से इसका उपयोग करना भी आसान हो गया है. ज्योतिष का पहला सॉफ्टवेयर डॉ. अरुण बंसल ने डेवलप किया है. ज्योतिष में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग किस तरह किया जाए, इस विषय पर वे शोध कर रहे हैं. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण ज्योतिष का रूप ही बदल जाएगा. ज्योतिष से संबंधित ऐसी ही कुछ खास बातें डॉ. अरुण बंसल ने हमें बताईं. प्रस्तुत है डॉ. अरुण बंसल से, दै. 'आज का आनंद' के प्रतिनिधि द्वारा की गई एक खास मुलाकात के कुछ अंश –

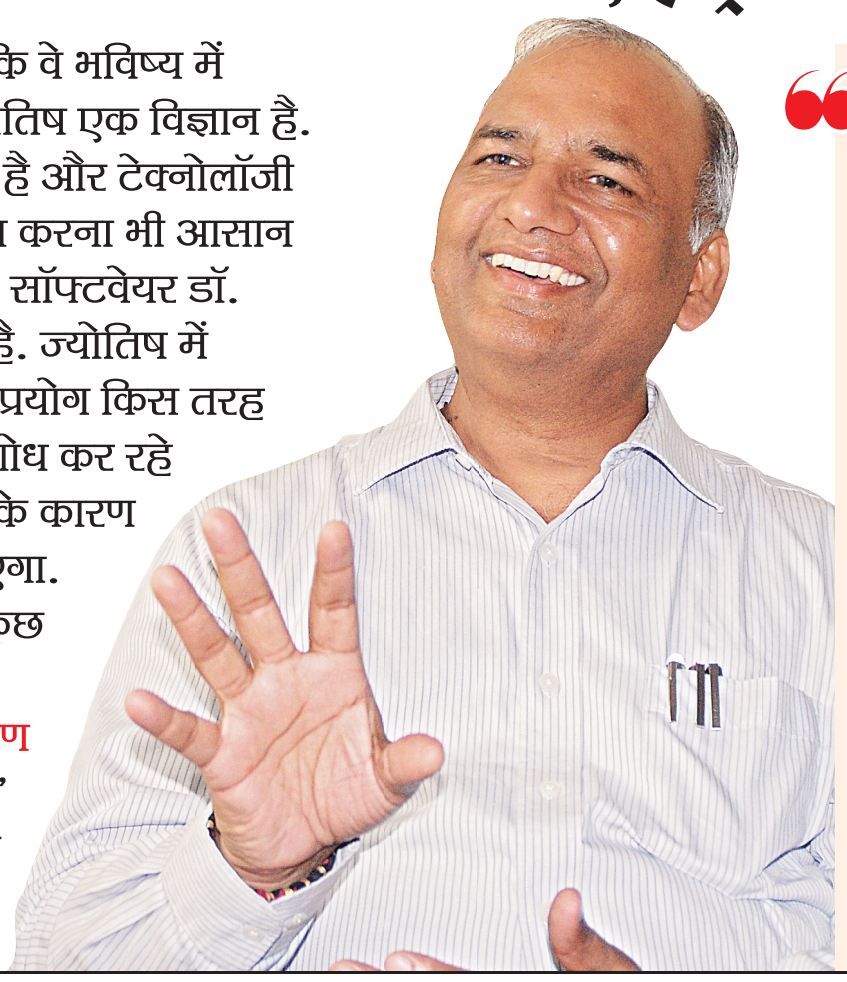

"ज्योतिष, एक ऐसा शास्त्र है जो पिछले हजारों वर्षों से अस्तित्व में है. 2000 से 5000 वर्ष ग्रंथों में लिखे गए ग्रंथों अनुसार ज्योतिष द्वारा लगाए गए अनुमान सही होते थे; लेकिन अब समयानुसार इसमें बदलाव हो गए हैं. ज्योतिष के महत्वपूर्ण चरणों या इस क्षेत्र में हुए बड़े बदलावों के कारण ऐसा हुआ है. इसमें पहला है कंप्यूटर का प्रयोग. उसके बाद इंटरनेट आया जिसके कारण एक ही स्थान पर सभी तरह की जानकारी मिलने लगी. फिर मोबाइल फोन आया और अब इसका नवीनतम चरण आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस है.

?. भारत की समस्याएं कब तक दूर हो जाएंगीं?

डॉ. अरुण बंसल : वास्तव में भारत के सभी संकट अगले दो-तीन महीनों में दूर हो जाएंगे क्योंकि 2020 से भारत का स्वर्ण काल शुरू हो जाएगा. नवंबर माह में शनि, धनु राशि में प्रवेश करेगा. जनवरी माह में वह मकर राशि में जाएगा. इस समय भारत के लिए पॉजिटिव समय की शुरुआत हो जाएगी . इस दरमियान भारत के सामने खड़ा वित्त संकट खत्म हो जाएगा. अगले 5 वर्षों में तेजी से प्रगति करेगा. चीन की बराबरी कर भारत विकसित देश के रूप में अपनी पहचान स्थापित करेगा.

?. क्या स्वर्ण काल में देश का कश्मीर मुद्दा सुलझ जाएगा?

डॉक्टर अरुण बंसल : हाँ, बिल्कुल. कश्मीर की समस्या अब ज्यादा दिनों तक नहीं रहेगी. 15 सितंबर से 10 अक्टूबर के दरम्यान इस मुद्दे में और समस्याएँ जुड़ जाएंगीं, लेकिन 10 अक्टूबर तक इन्हें सुलझाने में भारत सफल हो जाएगा. बाद में यह समस्या पूरी तरह सुलझ जाएगी. इतना ही नहीं, अगले वर्ष राम मंदिर का मसला भी सुलझ जाएगा. नवंबर माह में गुरु में परिवर्तन होने वाला है. इस परिवर्तन के कारण दीपावली के बाद राम मंदिर के संबंध में कोई घोषणा की जा सकती है; और अगले वर्ष राम मंदिर का काम शुरू हो जाएगा.

?. ज्योतिष में नई टेक्नोलॉजी के प्रयोग के संदर्भ में क्या कहना चाहेंगे?

डॉ. अरुण बंसल : फिलहाल ज्योतिष में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर कार्य जारी है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आने से इस क्षेत्र में बड़े बदलाव होंगे. लोग ज्योतिष विशेषज्ञों की अपेक्षा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर अधिक विश्वास करने लगेंगे. यह बदलाव तुरंत नहीं दिखाई देगा, लेकिन अगले 10 वर्षों में निश्चित तौर पर ऐसा होगा. कंप्यूटर द्वारा जन्मपत्रिका तैयार करना, ज्योतिष के क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ. शुरू में लोगों का कंप्यूटर पर विश्वास नहीं था लेकिन अब कंप्यूटराइज्ड जन्मपत्रिकाएं बनाई जाती हैं. इसके बाद इंटरनेट के प्रयोग से एक ही स्थान पर बैठे हुए बहुत सी जानकारी मिलने लगी. मोबाइल द्वारा हम एक क्लिक पर कॉल कर अपना भविष्य जान सकते हैं. मोबाइल के कारण अब लोग कॉल कर अपना भविष्य पूछते हैं. अब मैं 15 मिनट में मोबाइल पर लोगों का भविष्य बता सकता हूं. मोबाइल पर भविष्य बताने के बाद, सीधे अकाउंट में पैसे ट्रांसफर करने के लिए हम कहते हैं. लोगों को यह ज्यादा सुविधाजनक लगता है इसलिए अब इस तरह से भविष्य बताए जाते हैं. मुझे इसके लिए अमेरिका, यूके, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया और पाकिस्तान से भी कॉल आते हैं. ज्योतिष की पुस्तकों में भी बदलाव होंगे. इसके साथ ही आजकल डेटा भी महत्वपूर्ण हो गया है. हम इस संबंध में कार्य कर रहे हैं, जिससे व्यक्ति का चेहरा स्कैन करने पर उसकी सारी जानकारी सामने आ जाए और उसे उसका प्रेडिक्शन कर दिया जाए. इसके लिए बड़ा डेटाबेस होना आवश्यक है. जब कोई व्यक्ति जन्म पत्रिका देखता है तो वह 2-3 फैक्टर का विचार कर प्रेडिक्शन करता है लेकिन कंप्यूटर दो हजार फैक्टर्स का विचार कर प्रेडिक्शन करता है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के पहले चरण में हम विवाह, बीमारी जैसे विषयों का सॉफ्टवेयर बना रहे हैं.

?. क्या टेक्नोलॉजी के प्रयोग के संदर्भ में आपकी सरकार से कोई मांगें हैं?

डॉ. अरुण बंसल : हाँ, हमने सरकार के सामने एक मांग रखी है. सरकार द्वारा ज्योतिष विद्या के लिए आर्थिक सहायता मिलती है लेकिन फिलहाल ज्योतिष को मौसम विज्ञान के अंतर्गत रखा गया है. हमने एचआरडी मिनिस्ट्री से मांग की है की ज्योतिष के लिए एक स्वतंत्र विभाग का निर्माण किया जाए. साथ ही हमने यह मांग भी रखी है कि बी.टेक. इन एस्ट्रोनॉमी कंप्यूटर साइंस नामक एक पाठ्यक्रम शुरू किया जाए, जिसमें एस्ट्रोनॉमी, साइकोलॉजी, फाइनेंस, पॉलिटिक्स जैसे विषयों को शामिल किया जाए. भविष्य में ज्योतिष के लिए कंप्यूटर महत्वपूर्ण हो जाएगा. इसलिए ऐसा डिग्री कोर्स शुरू करने पर लोगों को निश्चित ही फायदा होगा.

एक नजर में : डॉ. अरुण बंसल

- जन्म दिनांक: 13 दिसंबर 1956.
- 1981 में एस्ट्रोलॉजी का पहला सॉफ्टवेयर डेवलप किया
- पिछले 40 वर्षों से ज्योतिष का अध्ययन कर भविष्य बताने में माहिर
- प्रतिदिन कम से कम 25 से 50 पत्रिकाएँ देखते हैं
- अब तक 15000 से अधिक छात्रों को पढ़ाया देशभर में ज्योतिष विद्या सिखाने के डेढ़ सौ सेंटर्स
- अमेरिका, यूके, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान आदि के नागरिक भी उनसे लेते हैं
- मो. : 9350508000/9910080001

?. आपके पास आने वाले लोगों से संबंधित अनुभव बताएँ.

डॉ. अरुण बंसल : मैं खासतौर पर बताना चाहूँगा कि मेरे पास आने वाले लोग मायूस चेहरा लिए या रोते हुए आते हैं लेकिन जाते समय हँसते हुए जाते हैं. क्योंकि लोगों को यह समझ में आ जाता है कि जीवन में बुरा समय तो आता ही है, लेकिन ऐसा समय खत्म होकर, आगे अच्छे दिन आने वाले हैं. एक बार किसी को यह गणित समझ आ गया तो फिर उसके भीतर की नकारात्मकता दूर हो जाती है. मन में सकारात्मक भावना आने के कारण वह सक्रिय हो जाता है. कई बार मुझे ऐसे फोन आते हैं जिसमें संबंधित व्यक्ति कहता है कि अब वह आत्महत्या करने वाला है. तब मैं उन्हें तत्काल इफेक्ट दिखाने वाले उपाय बताता हूँ. यदि ऐसी संवेदनशील अवस्था में व्यक्ति का मन एक बार रम गया, तो फिर वह नेगेटिविटी से दूर हो जाता है और आत्महत्या करने के विचार से विमुख हो जाता है. दूसरे दिन मैं उस व्यक्ति को बुलाकर उसकी जन्मपत्रिका देखकर उसे कुछ उपाय बताता हूँ. एक बार व्यक्ति को आशा की यह किरण दिख जाए, कि बुरे समय का भी अंत होता है, तो फिर वह जोश के साथ काम में जुट जाता है.

?. ज्योतिष के आधार पर सुझाए गए रत्नों, उपायों आदि का किस तरह प्रभाव पड़ता है?

डॉ. अरुण बंसल : विदेशों में लोगों के मानसिक संतुलन बिगड़ने के केस अधिक दिखाई देते हैं. इसके ट्रीटमेंट के लिए लोग साइकोलॉजिस्ट के पास जाते हैं लेकिन इसका ज्यादा फायदा नहीं होता. हमारे यहां इसकी संख्या कम है. इसका कारण यह है कि लोग अपना भविष्य जानकर उसके अनुसार उपाय करते हैं. इससे उन्हें लाभ होता है. प्रत्येक मानव शरीर अलग है. हर व्यक्ति के शरीर में अच्छी रेज को अपने भीतर समाहित करने की शक्ति की एक विशिष्ट सीमा होती है. जन्मपत्रिका के ग्रहों के आधार पर इसका अंदाजा लगाया जाता है. यदि किसी व्यक्ति को अच्छी किरणों कम संख्या में मिल रही हो, तो उसे वे अधिक संख्या में मिलें, इसके लिए उसे एक निश्चित रत्न पहनने के लिए कहा जाता है. साथ ही कभी-कभी नेगेटिव किरणें अधिक मात्रा में मिल रही हों तो उन्हें कम करने के लिए, रुद्राक्ष अथवा जाप, मंत्र बताए जाते हैं. इन उपायों के कारण उस व्यक्ति में निश्चित ही परिवर्तन दिखाई देते हैं.

?. भविष्य जानने से क्या लाभ होते हैं?

डॉ. अरुण बंसल : यदि आने वाले संकट के बारे में पहले से जानकारी हो तो निश्चित ही उसकी तीव्रता कम की जा सकती है. संकट के स्वरूप के अनुसार उपाय करने के कारण इस तीव्रता में कमी आती है. मेरे पास एक व्यक्ति आया जिसकी साढ़े साती शुरू हो गई थी. उसके जॉब पर इसका प्रभाव पड़ने वाला था, वह त्रस्त होकर जॉब छोड़ने वाला था. उसे ट्रांसफर नहीं चाहिए था लेकिन यदि उस समय वह नौकरी छोड़ देता तो अगले 5 वर्ष उसे नौकरी नहीं मिलने वाली थी. मैंने उस व्यक्ति को यह परिस्थिति समझाकर बताई. फिलहाल वह नौकरी कर रहा है और उसे नौकरी में होने वाला कष्ट भी कम हो गया है क्योंकि उसे परिस्थिति ज्ञात हो चुकी है.

?. क्या विवाह के समय जन्मपत्रिका देखने का कुछ लाभ होता है?

डॉ. अरुण बंसल : हाँ, बिल्कुल होता है. हम ग्रह दशा देखकर कुछ बातें बता सकते हैं. विवाह में मंगल ग्रह के कारण ज्यादा कष्ट नहीं होता; अन्य ग्रहों के कारण हो सकता है. लेकिन जन्मपत्रिका देखने के कारण कई बातें समझ में आती हैं.

"भारत देश की राशि कर्क है और लग्न की राशि वृषभ है. 2020 से भारत का स्वर्ण काल आरंभ होगा. फाइनेंस के क्षेत्र में भी बहुत अच्छे बदलाव होंगे. जनवरी माह में साढ़ेसाती खत्म हो जाएगी. तीसरे स्थान पर शनि आने के कारण अच्छे बदलाव दिखाई देंगे. इस कारण जनता के कष्ट भी दूर हो जाएंगे. 1991 में भारत के लिए अच्छा समय आया था. इतने वर्षों बाद अब 2020 में फिर इसका योग है.

?. आजकल डिवोर्स की संख्या बढ़ गई है. इसके बारे में आपका क्या कहना है?

डॉ. अरुण बंसल : डिवोर्स का सबसे बड़ा कारण ईगो है. यह समस्या केवल भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में है. पिछले 10 वर्षों में डिवोर्स की संख्या बढ़ गई है. आजकल लड़कियां शिक्षित हैं, उनके अपने स्वतंत्र विचार हैं. पहले की लड़कियों की तुलना में, आजकल की लड़कियां ज्यादा विचार करती हैं. साथ ही उनमें ईगो प्रॉब्लम भी है.

?. ईगो कम करके सुखी जीवन जीने के लिए क्या मंत्र देना चाहेंगे ?

डॉ. अरुण बंसल : अध्यात्म को अपनाएं. अध्यात्म, जीवन जीने का एक मार्ग है लेकिन आजकल अध्यात्म को उचित महत्व नहीं दिया जाता. अध्यात्म के मार्ग पर चलना अंधविश्वास माना जाता है, लेकिन यह गलतफहमी है. हमें समझ आना चाहिए कि हम कौन हैं. आजकल कोई इस तरह का विचार नहीं करता. जब तक हमारा शरीर है तब तक सब कुछ है, रिश्ते-नाते हैं; लेकिन मृत्यु के बाद हम ये सब यहीं छोड़कर जाने वाले हैं. इसलिए जीवन को खुशी-खुशी जीना चाहिए. ईश्वर ने जो दिया है उसी में संतुष्ट रहना चाहिए. 'ईश्वर ने हमें बहुत कुछ दिया है,' ऐसा विचार करने पर ही संतुष्टि मिल सकती है. यदि हम संतुष्ट हैं तो हमें सुख का अनुभव होता है, इससे हमारा ईगो कम हो सकता है. हमें हर क्षण कुछ न कुछ चाहिए ही होता है; लेकिन ईश्वर सब कुछ देगा ही ऐसा जरूरी नहीं. इसलिए हमारे पास क्या है, उससे हमें कितनी खुशी मिलती है – इस बात का विचार करना चाहिए और संतुष्ट जीवन जीना चाहिए. ऐसा होने पर ही हमारा ईगो कम हो सकता है और उसके कारण होने वाले झगड़े, वाद-विवाद, तनाव कम होते हैं. अपना दृष्टिकोण बदलने पर जिस वस्तु या स्थिति में हमें कमी दिखाई देती है, वह कमी दूर हो जाती है. हमारी वस्तु या परिस्थिति तो वहीं रहती है लेकिन दृष्टिकोण बदलने के कारण बहुत कुछ बदल जाता है.

?. ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ एस्ट्रोलॉजर्स सोसाइटीज के बारे में बताएँ.

डॉ. अरुण बंसल : ऑल इंडिया फेडरेशन आफ एस्ट्रोलॉजर्स सोसाइटीज के भारत भर में कुल 150 केंद्र हैं, जहां 15,000 से भी अधिक छात्र-छात्राओं ने शिक्षा प्राप्त की है. ज्योतिष विद्या सीखने में विद्यार्थियों को सामान्यतः 3 वर्ष का समय लगता है. हमारे पास 6 – 6 महीनों के 4 कोर्स हैं. उस के बाद रिसर्च का काम होता है. एक कोर्स की फीस 6,000-10,000 रुपए तक है. फेडरेशन का महत्वपूर्ण काम, लोगों को प्रशिक्षण देना है. इस विद्या का टेक्निकल अध्ययन करने पर युवाओं को फायदा जरूर मिलता है. कैरियर के रूप में यह एक बढ़िया ऑप्शन है.

?. भारत में सामान्यतः कितने ज्योतिषी हैं ? उनमें से महिलाएं कितनी हैं ?

डॉ. अरुण बंसल : भारत में लगभग 10 लाख ज्योतिषी हैं. प्रति हजार व्यक्ति एक ज्योतिषी है. इस क्षेत्र में महिलाओं और पुरुषों की समानता है. कई महिलाएँ ज्योतिषी हैं, लेकिन ज्यादातर वे भविष्य ही बताती हैं; रिसर्च में महिलाओं की संख्या बहुत कम है. साथ ही अन्य क्षेत्रों की तरह ही ज्योतिष में भी रिसर्च के लिए बहुत कम लोग उत्सुक होते हैं. प्रति 100 व्यक्ति केवल चार व्यक्ति ही रिसर्च क्षेत्र में जाते हैं; यही स्थिति ज्योतिष की भी है.

?. ज्योतिष से संबंधित सेमिनार से क्या लाभ होता है?

डॉ. अरुण बंसल : कभी-कभी सप्ताह में 5 सेमिनार होते हैं. वहाँ ज्ञान का आदान-प्रदान होने के कारण लाभ तो अवश्य होता है. आने वाले व्यक्ति अपने बेस्ट अनुभव बताते हैं, जिससे दूसरों के ज्ञान में वद्धि होती है. एक दूसरे के अनुभवों से सीखने को मिलता है. इस कारण सेमिनार का आयोजन, और इसमें ज्योतिष विशेषज्ञों का एकत्र होना महत्वपूर्ण है.

?. क्या लोगों का भविष्य के प्रति देखने का दृष्टिकोण बदल गया है?

डॉ. अरुण बंसल : हाँ, यह सही है. पहले ज्योतिषी के पास आने वाले लोग कुछ निश्चित प्रश्न ही पूछते थे. जैसे- विवाह कब होगा? बच्चे कब होंगे? व्यवसाय किया जा सकता है क्या? आदि. अब समय के अनुसार लोगों के प्रश्न भी बदल गए हैं. अब लोग स्पेसिफिक और फोकस्ड प्रश्न पूछते हैं. जैसे किसी नौकर को नौकरी देने के पूर्व मालिक पूछता है कि क्या वह व्यक्ति सही है ? क्या वह उस नौकरी में टिकेगा...? आदि. आजकल रोजमर्रा की समस्याओं के लिए भी ज्योतिषी से सलाह ली जाती है.

?. आपने टैरो कार्ड का अध्ययन भी किया है उसके बारे में बताएं.

डॉक्टर अरुण बंसल : टैरो कार्ड का तरीका लगभग 100 वर्ष पुराना है. पहले इस कार्ड का उपयोग पत्ते खेलने के लिए किया जाता था. फिर राइडर और वेट नामक दो व्यक्तियों ने इसका शोधपूर्ण अध्ययन कर यह तकनीक विकसित की है. हमारे जीवन में घटने वाली कोई भी घटना अचानक नहीं घटती. उसके पीछे एक फोर्स, एक विचार होता है. आपके मन में अचानक कोई प्रश्न क्रिएट नहीं होता; साथ ही उत्तर भी अचानक नहीं मिलता. हर कार्ड का एक अलग अर्थ होता है. डिजिटल कार्ड भी उपलब्ध हैं, उनके आधार पर भी भविष्य बताया जा सकता है.

Popular among lacs of readers across Maharashtra
3 Daily Newspapers in 3 Languages

Newspapers filled with Education & Entertainment content

For last 49 years, Aaj Ka Anand group has been involved in giving quality reading material to the readers through its dailies... The thirst for knowledge, education and information of readers is identified by the group and the same is shared in the dailies... These are the dailies which have something to read for everyone in the family...